अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान – तेरापंथ के वर्तमान का अनुदान : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 16 जनवरी 2011

अहिंसानिश्ठ व्यक्तियों का ये कर्तव्य होता है कि वे स्वयं भी अभय रहें और अन्य को भी भयभीत ना करें, वस्तुतः यही अहिंसा है। व्यक्ति स्वयं के कल्याण के प्रति सचेश्ट रहे और दूसरों को भी सही मार्ग पर लाने का प्रयास करें। आचार्य महाश्रमण ने रविवार को गोल्छा ज्ञान मंदिर के प्रांगण में वर्तमान के संदर्भ में तेरापंथ विशय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि जैन भाास्त्रों में दान बहुत प्रकार के माने गये है जैसे कि अन्नदान, ज्ञानदान आदि, पर इन सब में सर्वश्रेश्ठ है अभयदान।

सबके पास सर्वज्ञता नहीं होती यदि होती तो आदमी बिना भाास्त्र का अवलोकन किये ही ज्ञान प्राप्त कर लेता। सर्वज्ञता के अभाव में भाास्त्र सहारा बनता है और आदमी ज्ञान प्राप्त करता है। दया की भवना मन में रखते हुए दूसरों को कल्याण हेतु सही मार्ग पर ले जायें यह अनुकम्पा की चेतना है।

आचार्य महाश्रमण ने वर्धमान महोत्सव के दूसरे चरण पर वर्तमान के संदर्भ में तेरापंथ विशय पर चर्चा करते हुए कहा कि जीवन में वर्धमानता आनी चाहिए, वर्धमानता के अनेक तत्व है। हम आगे बढ़ें और अच्छे कार्य करें। संत और साध्वियों पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि ये पदयात्राएं करते हुए कश्ट सहते है। कार्यों को पूर्ण करते है। इनमें अच्छा साहस एवं मनोबल है।

महाश्रमण ने कहा कि गुरूदेव तुलसी समर्थ ाील व भाग्यवान आचार्यों में थे जिन्हे लम्बा कार्यकाल मिला। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान के कार्यक्रमों का विस्तार कर मानवता की सेवा की और आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हे आगे बढ़ाया। ये कार्य आगे बढ़ते रहेंगे उनमे वर्धमानता होगी। इससे पूर्व साध्वी सोमलता, मुनि सुखलाल एवं समणीवृंद ने गीतिकाएं प्रस्तुत की व मुख्यनियोजिका विश्रुतविभा व साध्वी आरोग्यश्री ने ने कहा कि पूर्व आचार्य गुरूवर तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ जी ने तेरापंथ को एक नया रूप दिया। यह धर्म मानवता के लिए प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है।

कार्यक्रम में श्री भोजराज हीरावत परिवार द्वारा तेरापंथी सभा रतनगढ़ को 11 लाख रू. देने पर मंत्री श्री कमल बैद ने उनका अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com